

264
Devi
Mahātmya

1946 I

ASHA ARCHIVES



॥ मुनिः सुखं उवाच ॥ सावर्धुः सुखं तनया ॥ आनन्दः कथं तं समं हि ॥
 मयत् इत्यहं विस्मयाद्भवताममं ॥ महामाया नृणां वनयथामन्त्रेण वा प्रियः ॥ सर्वस्वमहासागरः सावर्धुः
 श्री ॥ स्तनयुः प्रवक्ष्यामि ॥ स्वर्गादिष्वनन ॥ दूर्ध्वं चैव त्वं न समद्वयः ॥ सन्नामना जातः त्वमसि हि तन्म
 तुली ॥ तस्यैवालयतः सत्यं ॥ उजायूना निवीयमानः ॥ वसुधैव कुटुम्बकम् ॥ कालाविधौ सिनः
 थः ॥ तस्यैव नरवयुः प्रमत्तः प्रवदन्ति नः ॥ न्यूनैव विसेतैर्युद्धं कालाविधौ सिनः ॥ तस्यैव स्व
 वृमायाता निजदमः प्रियारुयता ॥ आकाशः समः सागरः सदा युवता विनिर्दिष्टः ॥ जन्ममौर्ध्वलिनिर्दिष्टः
 उच्चैः सक्तः सक्तः उच्यते विनिर्दिष्टः ॥ नीचैः सक्तः सक्तः उच्यते विनिर्दिष्टः ॥ नीचैः सक्तः सक्तः उच्यते विनिर्दिष्टः
 निको वीर्येन उवाच ॥ किं नृणां विनयेन सर्वैः ॥ नमः मन्त्राणां विनयेन सर्वैः ॥ नमः मन्त्राणां विनयेन सर्वैः ॥

ईर्ष्यालस्य इनात्मरिः ॥ कायैव लं वायवता ॥ तस्यैव लं वायवता ॥ तस्यैव लं वायवता ॥ तस्यैव लं वायवता ॥
 लकाकी रुयमानः ॥ जगन्मगहनं वनी ॥ सततं यममडाकी द्विजवर्यस्य मेधसः ॥ यमनः सततं यममडाकी
 मुनिनिधाय ॥ प्रसिद्धः ॥ तस्यैव लं वायवता ॥ तस्यैव लं वायवता ॥ तस्यैव लं वायवता ॥ तस्यैव लं वायवता ॥
 मुनिवनाय ॥ सावित्र्यरुदः ॥ तस्यैव लं वायवता ॥ तस्यैव लं वायवता ॥ तस्यैव लं वायवता ॥ तस्यैव लं वायवता ॥
 दितः ॥ महर्षेः सदा सदा ॥ तस्यैव लं वायवता ॥ तस्यैव लं वायवता ॥ तस्यैव लं वायवता ॥ तस्यैव लं वायवता ॥
 तस्यैव लं वायवता ॥ तस्यैव लं वायवता ॥ तस्यैव लं वायवता ॥ तस्यैव लं वायवता ॥ तस्यैव लं वायवता ॥

॥

पृष्ठ ॥ २

न्यमहीरणी॥ असम्यग्ययणीलेसे॥ कर्त्तुं दि॥ सगरीयसी॥ सस्मिन् साति इ॥ खन कर्य काष्ठानि यति॥
अतश्चान्यद्वसगरी विनयामासया विवशो गय विषाद्यमास्या सवेधमर्थ ददर्श स॥ सद्यः स्तनक द्वा रं
उच्यते गमनं कर्त्तुं साधकं पूव कस्मात्त्वं इर्मना पूव लभ्यते॥ पूव कर्त्तुं वयस्य सुखं ॥ १८
वयादिती॥ पुण्यवाच्यसर्ग वेधः॥ पुण्यवाचनं नृय॥ १९ ॥ वेध उवाच॥ समाविन्नमिदं वेधः
मृत्योर्नाशनिर्ना कृते॥ पूणदा वेत्ति वस्तु धनलाकादसाधु रि॥ विहीन य धने॥ दीने॥ पूरे वायाय मे
धने॥ वनमस्यागता इ॥ स्त्री निनक्त अकथयन् री॥ सा हन व द्धि यशसं कशीला कृला सि की॥ पुण्यं

स्वजनानां च दाया अक्षयं संस्तिग॥ किन्तु गीर्वा गुरु दाम मर्द्धमं किन्तु सां यती॥ कथं न किन्तु सहसा इष्टं सा॥
किन्तु मे सुता॥ २५ ॥ वाजावाच॥ ये विवशो रुवांश्च द्वे॥ पूणदा वादि रिद्धिर्ने॥ २० ॥ वृक्षि रुवा॥ २१ ॥ सनय
आतिमानसी॥ २२ ॥ वेध उवाच॥ २३ ॥ उवमग यथा यदु रुवान्मम धर्मं वय॥ किं कथा मि न्वक्षमा
मम नि कृपणा मन॥ २४ ॥ सीए अयि मस्ते हं धनं लब्धे विवा द्वा सां यति स्वजन हार्दक्ष हादि
धवममन॥ किमगन्ना रिजानामि कानमयि मरुमत् ॥ ३२ ॥ य एम यव व पक्षि विष्णु वा ययि वं धूय॥ ३३ ॥ गीर्वा
दत्तमनिधमसा दीर्मनस्य अजायत॥ कथा मि किं य वमन रुं कृपणीति य नि कृप॥ ३४ ॥ सा ह्य उवाच॥ ३५

ततस्तोसदितोविद्य गमनिसमयहितो। समाधिनामवे। ओं सो सचयार्थवसरुमः॥ कृत्वा पुनो यथान्यायं
 यथा हर्तनसन्निधौ॥ उयविद्येकथः॥ कांश्चिच्च कुरुर्वै यथा। धिक्॥ ७८ ॥ वाडावाच॥ रुगर्वेत्तामहं यद्व
 मिका मर्कवदस्वगत॥ ७९ ॥ आय ज नमनसः स्ववित्तयकतामिना॥ समर्त्तममवा अस्य वाचा। म
 स्थितस्य यि॥ जानतो यियथः॥ ह्यकिमतमूनिसरुम॥ अयं च निहातः यूने दाने ईहसे स। थ कि
 तः॥ स्वजननयसै एक सुयूहा दाने तथा यति॥ एवमयथा अरुह्य दाने य एक इह स्थितो॥ दृष्ट्वा मयि वि
 श्रय समत्वा कुरु मानसो॥ तत्कमेतन्महा राग यन्माहा हानिना वयि॥ समास्य च एव एषा विवका न्येय

॥ ॥
 ॥ ॥

मूरुता॥ ४३ ॥ ॥ अवि नूवाच॥ ४६ ॥ ज्ञानमस्मि समस्तस्य जना विषय। मवच। विषय च महा राग जाति। ये वं य
 थकथथक॥ दिवा न्याः॥ यातिनः॥ कवि जगता वन्धे सुथयत्र॥ कवि दवातः॥ यातिन मुत्य दृष्टयः॥ ज्ञा
 निनो मनूजाः सत्यं किलुतिन दिक्वर्त्त॥ यगा॥ हि ज्ञानिनः सर्वं यगुय किमृ गमदयः॥ ज्ञानधर म
 मनूयाः॥ यतिषी मृगयति ॥ मन्त्र्याः॥ यतिषी तुल्यमन्यक ॥ अरुथाः॥ ज्ञान वि सुति
 य। ये ता न्यागं त्वावर्त्तयू॥ कदा मा द्वा दता माहातु यी प्रमातानि कथ॥ मानूया मनूजा य। दृष्टा हि
 लाकाः॥ सता न्यति॥ लाहात्यस्य कावाय नवरा किनये थसि॥ तथ यिममता वह माह ग रुनि यानिगा॥

ॐ॥
महामाया

महामायायुगवनसंस्तवस्ति का निमिता ॥ नाशविस्मयः कथं यागनिडाउगल्यग ॥ महामायाह्वये
यातयासंभा अतजगत् ॥ अनिनामयि उगा सिद्धी रुगवगी दिसा ॥ वालादाकृष्टमाहाय महामायायुयक
ति ॥ ग्याविस्मयतविष्णु जगद ॥ तच्चनाचरी ॥ सेयायुसन्नावनदा नृत्तं रुवतिमूकय ॥ साविद्या ५
यजमासूकं हं लुहतासनातनी ॥ संसात्रवंधरुधुय सिवसर्वधनधनी ॥ ॥ वाजावाच ॥ रुग
वन्कादिसादयी महामायतिथीरवान् ॥ उवाति कथमूत्यना साकमसिद्धा श्रीकिंदज ॥ यत्सुहावाचसादवी
यत्सु नृयायइहवा ॥ तत्सुर्व ॥ अमुमिकागित्व लोचनविदाम्बन ॥ ॥ अत्रिन्वाच ॥ निर्येवसाजगज्जुर्कि

सत्यासर्वमिदं तर्ग ॥ तथयितत्समूत्यहि र्वइधुयगीमिम ॥ दवानां कार्यसिद्धुर्थमाविर्भवतिसायदा ॥ उ
यन्नतिगदा लाकसनिष्ठा परिधीयत ॥ यागनिडां यदाविष्णु र्जगल्यकार्णवीकत ॥ अस्तीर्य गयमरुज
कल्यानरुगवात्यु ॥ तदा ॥ द्वावसूको धात्री विख्यातो मधूके जलो ॥ विष्णुकर्णम लाहूतो हं
उं बुध्नामूयतो ॥ सनालिकम ॥ लोदिष्ठा ॥ ह्मिता बुध्नायजायति ॥ दृष्टानावसूको या ॥ अयसूय
अजनादर्न ॥ बुध्नाव यागनिडां ना मकाय हृदय स्मिता ॥ विधाधनार्थयह्व हं विनैगुहना लया ॥
बुध्नावाच ॥ विष्णुवृत्री ॥ जगत् ॥ लोमिनिडां रुगवगी विष्णुनल्ल गेउम ॥ ल

नाभमभिय दवान अयमयन ॥ तजसुने मरुता वीर्ये दवसे नयनाजि ॥ जिह्वावसकलान दवानि ज्ञासुव
 हिवा सुन ॥ ततः यना जिना दवा ॥ यप्रथानि प्रजायति ॥ यन सुख गता सुय यन गगनरु ध्वजो ॥ य
 थवृ हं तथा सुद न हिवा सुन ॥ हिमी ॥ त्रिदशः कथयामासु देवा रिरुव वि सुन ॥ सुखं त्याग्य निर
 न्दुनां यमस्य वनू लस्य च ॥ यथा वा धिकानां स्वयमवाधिति कति ॥ सन्निवित्रा दताः सैव हि न
 दवगम सुवि ॥ विचवन्ति यथा मर्या म हि य द इनात्मना ॥ एतद्वः कथिर्गं सर्वं मम ना वि वि द हिमी ॥ गवर्ग
 ययुसना स्मा वध सुख्य वि वि न्या ॥ ६० ॥ तं निरम्य दवानां वया हि मधू सुदनः ॥ वकावका यी नी उपयुक्त

॥
 धीरोय ॥

टीकटिलाननी ॥ तता नि काय पूर्वस्य वकि ॥ अयना ततः नि य काम मरु रुडा व प्र ॥ ६१ ॥ किन स्य वा अय
 यी वैव दवानां ग जादीनां ग ना प्रतः ॥ निर्गरी सुमरु रुडा सुवे र्यं समग दत ॥ अतीव गज सः कृटं दलन मित्र
 यवर्त ॥ यदु सु सुना सुग दाला ॥ याय दि गननी ॥ अ सुलं त गत कि जः सर्व द व र नी व डी ॥ उ क र्क त
 दे रु न नी याय लो क य य विवा ॥ यद सु द क रु वी ग ज रु ना रु य ग त न्म र्वी ॥ या धन वा रु व ना
 वा रु वा वि सु त ज सा ॥ सी धन रु न या र्य र्गं म ध्वं र्धे लु न वा रु व ॥ वा रु रान व डी धा न्नि नी व रु ज सा रु व ॥
 व रु रु रु ज सा या दी तदं रु र्ध्वा कृ त ज सा ॥ व रु न अ रु क ना रु ल्यः ॥ की ल व रु न ना सि का ॥ तस्या मु द ना रु र्ध्व

॥॥
[दोरीया]

गा॥ या जायते न तजसा॥ नयनरितयं यद्गुणं तथा वाचकं तजसा॥ ऊर्ध्वो यस्य अथाक्षुडः ॥ ७ ॥ य भव निलस्य च॥
अथ यो वेदवानी स कुरु कुरु सी गिया॥ तजसा समसुदवानी तजसा नमि समसुदवा॥ तजसा अमर्दय प्र नम
नामरु यादित ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ७० ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ ७६ ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ ८० ॥ ८१ ॥ ८२ ॥ ८३ ॥ ८४ ॥ ८५ ॥ ८६ ॥ ८७ ॥ ८८ ॥ ८९ ॥ ९० ॥ ९१ ॥ ९२ ॥ ९३ ॥ ९४ ॥ ९५ ॥ ९६ ॥ ९७ ॥ ९८ ॥ ९९ ॥ १०० ॥
प्रसवव कत ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ७० ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ ७६ ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ ८० ॥ ८१ ॥ ८२ ॥ ८३ ॥ ८४ ॥ ८५ ॥ ८६ ॥ ८७ ॥ ८८ ॥ ८९ ॥ ९० ॥ ९१ ॥ ९२ ॥ ९३ ॥ ९४ ॥ ९५ ॥ ९६ ॥ ९७ ॥ ९८ ॥ ९९ ॥ १०० ॥
५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ७० ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ ७६ ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ ८० ॥ ८१ ॥ ८२ ॥ ८३ ॥ ८४ ॥ ८५ ॥ ८६ ॥ ८७ ॥ ८८ ॥ ८९ ॥ ९० ॥ ९१ ॥ ९२ ॥ ९३ ॥ ९४ ॥ ९५ ॥ ९६ ॥ ९७ ॥ ९८ ॥ ९९ ॥ १०० ॥
अथ मा दगु यादी याम्यतिद दो॥ य जायति अ दमा ली द दो व द्वा कम उली॥ समसु नाम कथय नि

८

जायभीन दिवा कज ॥ काल यद लवान्खर्भ तस्ये वर्म वनिर्मली॥ बीजाद अमर्दवान मज यवतथा म
॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ७० ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ ७६ ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ ८० ॥ ८१ ॥ ८२ ॥ ८३ ॥ ८४ ॥ ८५ ॥ ८६ ॥ ८७ ॥ ८८ ॥ ८९ ॥ ९० ॥ ९१ ॥ ९२ ॥ ९३ ॥ ९४ ॥ ९५ ॥ ९६ ॥ ९७ ॥ ९८ ॥ ९९ ॥ १०० ॥
तद हे वय कम नू कमी॥ अथुली यक वलानि समसुखी गुली मूव॥ विषक मदिदो तस्ये यव उ
तिनिर्मली॥ अथुली यक वलानि समसुखी गुली मूव॥ विषक मदिदो तस्ये यव उ
अथुली यक वलानि समसुखी गुली मूव॥ विषक मदिदो तस्ये यव उ
नया गुधना धिय ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ७० ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ ७६ ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ ८० ॥ ८१ ॥ ८२ ॥ ८३ ॥ ८४ ॥ ८५ ॥ ८६ ॥ ८७ ॥ ८८ ॥ ८९ ॥ ९० ॥ ९१ ॥ ९२ ॥ ९३ ॥ ९४ ॥ ९५ ॥ ९६ ॥ ९७ ॥ ९८ ॥ ९९ ॥ १०० ॥

त्रयि सुवेदं दीक्षयेत्तत्रायं त्रैलोक्यं ॥ संमानितानना दौष्टे ॥ साष्ट हार्सं मूर्ध्नि ॥ ३॥ तस्यानादन धानं च दत्तं
 प्रविर्तनं ॥ अमायता किमरुता यति गच्छामहानरुतं ॥ यद्वा ॥ ४॥ सकला लाका स्स मूला यवकमिध ॥ यवाल
 वसुधा ॥ वल ॥ ४॥ सकला यमहीधवा ॥ ४॥ उयति दवा यमूदा ताम्रवृक्षं सीरुवादिनी ॥ उष्ट्रवृक्षं मीनयष्टि
 नीरुकिन सात्ममूर्ध्नि ॥ ४॥ दृष्ट्वा स ॥ मर्लं सै कर्तुं ये ला यममवा यय ॥ सैनका खिल सेन्याक समरुतु
 दायुधा ॥ ४॥ अक्षि मगदिति को धनरा यमदिया सून ॥ अरुध वतर्गं यय मगये वसुवे दृ ॥ ४॥ सदय गतिता
 दयी या कला कययं लिखा ॥ यादा कान्ता नत तुर्व धे वी धलि विगी वगी ॥ का रिता गयया ता ली धनू जी नि ॥

ली ॥

दिनी ॥

स्वननती ॥ दि ॥ अरु उरु सु र सु र समना छा य सै स्त्रिती ॥ तत ॥ ४॥ यव दृ तय दंतया दवा सून द्विती ॥ वसु मूर्ध्नि
 इति मूर्ध्नि जदी यित दि गतं ॥ मदि या सून सेनानी विद्वान्वा महां सून ॥ यय ॥ ४॥ यामव धम्यं ययुर्गय
 ला विता ॥ नथना मयू र्गय वि ॥ वृद ग्रा र्वा महां सून ॥ अयू धना यतान अरु सी रमहां रुत ॥
 यय ॥ गदि धनियू र्गय सिता ॥ मरु सून ॥ अयू तानी गते ॥ यदि वी कला यय ॥ ४॥ गठवा
 जिसरु साधे वने के ॥ यय विवा विता ॥ यता नथनी का यय यदत सिनयू धना ॥ विजला र्वा यताना अय
 वागदि नथ यय ॥ ४॥ यय ॥ ४॥ सै य ॥ गत यय नथनी यय विवा विता ॥ अयू वत गयत ॥ ४॥ नथना गदये र्गता ॥ यय

प्री॥

दितीया॥

यूयू१संयुगदद्या सहस्रमहस्र१॥ काटि काटिसहस्रं सुनधनी दनिनाक॥ ह्यानाश्वर्यायूह तर्पितम्
दियासुन१तामयेह न्दियालेधन॥ किस्मिं गलेसु॥ यूयू१संयुगदद्या स्व१यवगुणदिने१ कविचिदि
यू१गकी१ कवित्या तं सुथायन॥ द वीस्रमयलोत्रे सु१गती हर्तुं यवजमू१॥ सायिदवीतग स्तानि गमु
अमुनिवदिका॥ लीलेयवयुक्किं द निजगमु सुवर्षिदी॥ अनायस्ताननादवी सुयमानासुनविमि
मूमायासुनद हृष्ट रमु गमु निवध्वनी॥ सायिदुद्धायेतगद दद्यादाहनकगनी॥ दवास्त्रसेन्यम वनधिव
कृतागन१॥ नि१॥ सासुनमययां य यूयमानानव (चन्द्रिका॥ तपयस्य१संखता गदमं१त सहस्र१॥ यूयू१सं

१०

यवगुलि र्लिहया लासियादिने१॥ नागयना सुनगध सुदवी गकूय दं दिता१॥ अवादयकयल्लान् गध१गंखा
रुथायन॥ मृदंमं धृतायेवाय गस्ति न्यहम हासुवा॥ ततादवीजि वृत्तन गदया ग किट्टिदिने१॥ स्वभादिदिने१
ता१॥ निजयानमहासुनान्॥ यात यामास्येवान्यान्यवृत्तस्वनविमाहितान्॥ अस्तान् सुविद्या॥ गनवध्वना
न्यानकर्यय॥ कविदिध्वकताली द्वे१स्वमयाते सुथायन॥ विद्याधिता नियातन गदया सुवि॥ गवत॥ नम
य कविदुध्विर्मूग लेनरुणीहता१॥ कविद्वियतिता सुमी रिवा१॥ लेनवदसि॥ निवकवा१॥ नी धेन दताकवि
सादिने॥ अनानू कावि१॥ यायन मूमरु सिदमर्दना१॥ कयाश्रिदरुवदिना दिवणी वासु थायन॥ निवां सि

पञ्चाङ्ग

[illegible][illegible]

प्रचर्मधवास्त्रमश्वसिंहरुमारुह्य स्वभनेतीदृशप्रचमूर्द्धनि॥ अजघान रुजसद्यदवीमश्रुतिव गवतूनीत्या
 खभा रुजं पाय यखलनृपनन्दना॥ तगाजगह धर्तृ सकोयादवृत्तलावनश॥ विक्षयवगतसुग सडका
 ॥ ५॥ त्यांमहसुनश॥ जाकल्यमानं॥ जाहिन विविचमिवाचवाहू॥ दृष्टातदायतकूलं दवीधूलममय
 त॥ तच्छूलं गतधर्तृननीतं सच महासुनश॥ हततस्मिन्महावीथं महिषस्यवमयती॥ अजगमः
 मगजावृत्तश्चमनमुदभर्दनश॥ साविताकैममायाथ दद्यात्तामसिकादुर्ग॥ कंकवाशिहर्ताहमीयात
 यामासनिःपुला॥ रुग्णं गकिंनियतितां दृष्ट्वाकाधसमन्विता॥ विक्षयवामनधूलं वाति सुदयि साकिनत॥

गतशक्तिरुत्तराख्यगजकैरानुवर्तिता॥ वाहयुद्धनयूयधतनाष्टे मुदत्तविष्णु॥ यश्चमानोतनसो
 तु तस्मान्नाम नमो गतो॥ ययथा ततिर्नष्टोपहोत्रे नतिदानलो॥ ततावगावृत्तमृत्युस्यनियत्यचमृगमि
 ता॥ कवयुहावदगिन्धमनस्य पृथक्कर्त॥ रुदयधवरादद्या निलावृद्धादिरिहता॥ दन्तमूर्द्धिते
 श्वेव क्वातलनियतिता॥ दवी कुद्धागदायाते शूर्पयामास वाहता॥ वाहलं रिद्धियालनवालेसा
 मुक्तधर्तृक॥ उगस्यमृगवीर्यश्रुतयेदयमहाहर्तृ॥ निनगावजिह्वलन जघानयनमध्वनी॥ विजान
 स्यासिनाकाया त्यागयामासवे गिन्ध॥ इदं नृपमूर्खं वासी गवेर्विन्ध्यमद्वयं॥ एवमस्त्रीयमादावुत्तर

नमो हि मातुः ॥ माहि वंशस्व नयने गायामास गान् गतान् ॥ कोष्ठि कुलु यल्लम ॥
 लीं गुलगा डिगी धन्यान् रंग साक्ष विदा विगान् ॥ वंशेन कोष्ठि दयमा न्ना दनजम (नय) नि ॥
 ७॥ न्यान् गायामास स्रुतले ॥ नियाए पुमथानी क मस्य भवगसा रस्रुत ॥ सिंह हर्तु मरुदका ॥
 कुततामिका ॥ सायि कायामरुदी र्यः खन हन महीतल ॥ नृगसा यवतानूची वि दययननादय ॥
 वगजमरा विहृता महीतस्य यगी र्यतः ॥ लीं गृले नाहतामि ॥ प्रावयामास सर्वतः ॥ धर्त रंगि विहृता ॥
 खलु खलु यय र्धना ॥ स्वासानिला सा ॥ गतः ॥ निया कुर्न रुसा वलो ॥ ७॥ निया का ध समाध्यात मायरी ती म हास

३॥ इहासाव तु का कार्यतद्वधयतादा कनात ॥ साहिहातस्ये येयानी तव वंश मरुदका ॥
 सायिव दामरुम (ध) ॥ साहिहातस्ये येयानी तव वंश मरुदका ॥
 तत उवा सयून्म दवी विहृद ॥ मयके ॥ र्खम वर्ममसा र्द्धततः ॥ साहना हाग उहा ॥ क वरायम
 हा सिंह तश्च कर्षजगर्ज्या ॥ र्धत मुकरी दवी र्व (मन निव दन त हा) तला मरुदका सुवा यान
 माहि र्धवयनासि तहा तथे व दारयामासे ला र्ध सवना वरी ॥ ततः ॥ कुदा जग न्माता रानि
 मये पूनः पूनः पिव ऊहासा नूला वना ॥ ननर्द वासुव ॥ सायि वलवी र्यमदा द्वा

६२

तः विषयान् मात विधि मः वधि

विर्याद्वयं यद्विदुः। गुह्यं सतां कूलजनपरवस्यल जां तां त्वानतां। सयत्रियालयदविचित्रं॥
 तव नयमविन्यमनक्ति। शक्तिवीर्यमसुत्रद्वयकात्रिद्वि॥ किं वा रुचयचपितानि नवति यानि सर्वेषु दयसु
 वगवादि कथं॥ हनु सुमसु जग ✕✕ तां विरुता विदोषैर्व ज्ञायस हवि रुना दि लि नयया ना॥ सर्वेषु
 या खिलमिदं जगदं गतमया ✕✕ ता हि यत्र मा सद्यति स्तुमा या॥ यस्याः समसु सुनता समुदीवा गन
 नृपि पयातिसकलसु मध्वसु देवि॥ स्वाहा सिवे चि नृग रास्य च नृपि हनु नृवा य सत्वमा एव जने ह्यम
 व॥ यामुक्ति हनु न विचित्रमरुवता च। अथ सप्तमं नियतं लि यत त्वसा वैश। मा नार्थि रि मृ नि रि नरस

॥

१७

मरुदोषे विद्यासिसारुगवती यत्र मा हि देवि॥ गच्छा लि का सुविलग्न रुयानि धन मू डी धन मय धन या एव तां
 वसाम्नी॥ दवी गयी रुगवती रुवरावनाय वारु च सर्व जगतां यत्र मा हि देवि॥ मय सिद्ध विविदिता खिल
 मुसावा इन्म सिद्ध र्गन रुवसा गत्र नी वस ३॥ जी ४ के ७ रा वि द्दये क दता वि वा सा एने वी त्वमव गनि
 भी लि क्त ४ य ति का॥ ॥ य व सु स सममर्त्य वि पू र्व च लुं वि म्ब नू का लि क न का रु म का नि का नी ॥
 अथ हुनं पद ग मा फ नू या त थ वि व कुं विला क्त स रु सा म हि या सु न रा॥ द्वा ह नु द वि क यि तं दु क्क णी क ना ल
 मय क्त ५ क स द रा क वि य न्न स य ४॥ या रा नू मा च म हि व रु द ता व वि र्ग के र्जि य त हि क यि ता न क क र मि

॥॥॥॥॥

[illegible][illegible]

५१॥ जमिश्चकिश्चित्थादिनां ॥ ऐला का प्रियति ॥ उरु निउरुया प्रियतादृश ॥ किं ह्ययत्ति किं जमिश्च
 तत्तु जीयत कथं ॥ अयाममल्य वदित्वा ह्यति स्थायकता यूना ॥ यामी जयति संगम यामदर्थं यथाहति ॥
 यामयति ववा स्नाक म्पुरुष ॥ हविष्यति ॥ तदा गच्छतु उरु निउरुया वामलासव ॥ मी उल्ला किं वि २३
 प्रमगुया लीट द्वा कुमल व ॥ ॥ द्वा उवाय ॥ अवलि फा सि मे वत्तं व वि कु हि म मा गता ॥ ऐला य
 कः प्रमां मिष्ठ द (उरु निउरुया ॥ अन्धमा म वि देह्यामी सर्व दवान वेयुषि ॥ तिष्ठति स मूख द वि क य
 न म्लीत्व म कि का ॥ उडा या ॥ सकला देवा ॥ न पृथग्मी न संयुग ॥ उरु दीनी कथं तर्वा मु यया ह्यसि संयुग ॥

सात्वं गच्छ मे ये वा का यार्वे उरु निउरुया ॥ कथं कथं त निरुत ॥ मे व वा मा ग नि यति ॥ ॥ दय दय ॥ अ
 मेत वली उरु निउरुया ति वीर्यवान् ॥ किं कया ति यति स्नाम यदना ला वि ता यूना ॥ सर्व गच्छ मया की र्थ
 दत्त सर्व मा दृश ॥ तदा च द्वा सुभ ॥ न्याय सव यूक क वा युयत् ॥ ॥ उति शी मा र्क उ म यूना ॥
 सावर्तु कम वत न देवी मा लक्ष्य ॥ दत्त वा र्क ॥ ॥ यमो ध्या ॥ अ वि न्वा च ॥ अल्य क र्क व द्या द द्या ॥ स ह
 मर्व यू वि त ॥ समा य दृ समा ग म्य देह्य ना जा य वि रु ना ॥ तस्य दृ त स्य त द्वा द्वा मा क द्वा सु व ना दृ त ॥ त
 प्र सा ह दे ह्या ना म वि र्य व स ला च नी ॥ रु द्वा स ला च ना उ व स मे न्य य वि वा वि त ॥ मा मा न य व ला दृ र्क

५१॥

यत्रानामन॥ तथैवथाधुनो नर्थसावधनासह॥ निदिधयवकुं दनने ध्वयत्यतिरुजय॥ ७८॥ जगद
कणीयुग्यायामथवायनी॥ यादनाकम्यवेवान् मयसान्मयाथयत्॥ केमकातिवगम्यनि महासुवि
मथसुवै॥ मुखनउणहनुवा दशने मीधितावयि॥ वलिनीतद्वलं सर्व मसुवा र्म महात्मनी॥ मम
धरिदयवान्या नन्यायताउ यरुथा॥ अमिनानिरुता॥ कचित् कचित् खवष्टा कताजिता॥ उभर्विना
मेमसुना दन्ता अरिदगासुथा॥ दानतद्वलं सर्व मसुवा र्म नियातिती॥ दृष्टाव अरिदुडावती काली मजि
हीषर्मी॥ शत्रवर्षे महीरामे हीमादिना मरुसुन॥ कादयामासवर्षे मृगु॥ ८०॥ ८१॥ ८२॥ ८३॥ ता नि

५२॥

वेकाचनकानि विहमानानि नमूरवी॥ वरुथथर्क विम्वानि सुवद्वनि घनादनी॥ तता ऊदासातिनूया
मैरुवनादिनी॥ काली कयालवकुल इ ईदिवनादला॥ उकायवमरुसी हादवीचलुमधवता॥
गृहीत्वावाक्यक (१००) निरुना सिनाकिन॥ अथम (१००) यथावली दृष्टावर्णु नियातिती॥ तम
थयाग्यरुमी साखप्रारिदन्ति मा॥ रुता (१००) र्म ८०० सीन्य दृष्टावर्णु नियातिती॥ मृगु अरुमहावी
र्थदि (१००) अरुयावुनी॥ निवधुस्यकालीव गृहीत्वा मृगुमेवव॥ पादुपव (१००) दास मिधुमथति
वधुकी॥ मयागवा शयदती वधुमृ (१००) महायध यदयद्वरुयै गुरु निगीरु अरुनिधसि॥ ॥

५॥

यस्य द्वितीयं ॥ रत्नायामवर्तमाना मणिर्विश्वलान्विता ॥ यस्मात्तुल्यविष्णुना तथेन्द्रस्य वरकथय ॥
गवींश्चा विनिष्कस्यत इत्येव तुल्यकथय ॥ यस्य देवस्य य इत्येव तथैव स एव देवता ॥ तच्च देवदत्तं वि
किं न स्यात् ॥ आदुमायै ॥ हंस यूक विमाना ॥ साकस्य उक्तमनुल ॥ ज्ञायात्तच्च ॥ १४ ॥ किं तु
आसीत् सा विष्णुयुगात् ॥ साकस्य उक्तमनुल ॥ ज्ञायात्तच्च ॥ १४ ॥ किं तु
विदुषा ॥ कीमाता ॥ किं हस्तच मयुनयनवाहना ॥ आदुमस्या यैयै देवता नैविका ॥ उक्तं विष्णु ॥ तथे
वैयै देवता ॥ किं न कृताय विनिष्कस्यता ॥ तथैव कथयता ॥ तथैव कथयता ॥ यस्मात्तुल्यविष्णुना तथेन्द्रस्य वरकथय ॥

२८

या विष्णुना देवता ॥ किं साकस्य यैयै देवता ॥ विष्णुना देवता ॥ नावर्तमाना मणिर्विश्वलान्विता ॥ यस्मात्तुल्यविष्णुना तथेन्द्रस्य वरकथय ॥
कातुल्यदेवता ॥ किं न कृताय विनिष्कस्यता ॥ तथैव कथयता ॥ यस्मात्तुल्यविष्णुना तथेन्द्रस्य वरकथय ॥
थाकस्य विष्णु ॥ तथैव कथयता ॥ यस्मात्तुल्यविष्णुना तथेन्द्रस्य वरकथय ॥
हस्तच मयुनयनवाहना ॥ आदुमस्या यैयै देवता नैविका ॥ उक्तं विष्णु ॥ तथे
साकस्य यैयै देवता ॥ किं न कृताय विनिष्कस्यता ॥ तथैव कथयता ॥ यस्मात्तुल्यविष्णुना तथेन्द्रस्य वरकथय ॥
मयुनयनवाहना ॥ आदुमस्या यैयै देवता नैविका ॥ उक्तं विष्णु ॥ तथे

अवधविश्रयिना॥ ततः सिद्धमरुनादे स्थाजितरुमरुमदः॥ दूयामास गगनं गमंतं थयदि (मदः)॥ ततः
 काली समुत्पद्य गगनं आसता उच्यते॥ कवा र्यात विना दत याक्व ना रूति प्रादिता॥ अष्टाष्टरुसंमतिर्न गिवि
 ॥ नीचकावदः॥ ततः मध्ये प्रसूनाभुसु १७ मुकुटकार्यवर्ग्येथो॥ इना र्मि क्विष्ठतिष्ठति यादृशाना म्बिकाय ३३
 या॥ तदा उच्यते रिदिर्न दवेयका र्मसंस्तिर्न॥ उरुना गत्य यादृकि र्म का दाला तिगी यना॥ आया
 नीचद्विक्कठरा सानि वसामरुत्कया॥ सिद्धना दन उरुस्य कार्य लाक रयानर्न॥ निर्घात निखना धात्रादि
 गयानवनीयतः॥ उरुमु कान् गवान् दवी उरु सुत्य हि कान् गवान्॥ विद्वदस्व गयेन उरुगता॥ अथ मरु

मुनिः॥ ततः सावदुका कृद्धा रलना रिजघानर्न॥ सितदा रिद्धता र्मो मूर्च्छितानिययातः॥ ततः निउमरुसं
 प्राय चतनामा रुका मूर्च्छः॥ आ जघान र्मो र्दवी काली क्वविद नथ॥ यूनध क्त्वा वा क्त्वा नाम यूरी दनू जघान
 वकायू (धनदिति उ क्त्वा दयामा सवदुकी॥ ततः रुगवती कृद्धा इग्नं इग्नं हिना रिनी॥ विद्वदना नि
 द्वादि स्वर्गप्रेशमयका यतान् ॥ ततः निउमरुगान गदामा दायवदुकी॥ अथ अवतरेरुर्दु
 र्मना समा दतः तत्तया यत उवा उ गदा अरु क्त्वा दय दिका॥ र्व (धनगित अ वद सव र्मसमा दद॥ र्दने
 रुर्मसमा यानं निउमरुसम वा र्दनी॥ इदिविद्या य र्दनेन वेग विद्वन च दिका॥ शिवस्य गत्य र्दनेन दयया

वरुणाय नमः दद्यात्पुण्यं वा रात्र्याः शयनं सर्वद्वाराणां मन्त्राणां श्रद्धा नदी ॥ नववर्षं शिरोऽर्पितुं सुखं
 सुखेन वदन्ते लोकं तथार्यं ह्यमरं ह्ययं सर्वलोकस्य कर्तुं ॥ दिवा अमुनिगतामममयया मयथा विना ॥
 वरुणाय नमः दद्यात्पुण्यं वा रात्र्याः शयनं सर्वद्वाराणां मन्त्राणां श्रद्धा नदी ॥ नववर्षं शिरोऽर्पितुं सुखं
 सुखेन वदन्ते लोकं तथार्यं ह्यमरं ह्ययं सर्वलोकस्य कर्तुं ॥ दिवा अमुनिगतामममयया मयथा विना ॥
 वरुणाय नमः दद्यात्पुण्यं वा रात्र्याः शयनं सर्वद्वाराणां मन्त्राणां श्रद्धा नदी ॥ नववर्षं शिरोऽर्पितुं सुखं
 सुखेन वदन्ते लोकं तथार्यं ह्यमरं ह्ययं सर्वलोकस्य कर्तुं ॥ दिवा अमुनिगतामममयया मयथा विना ॥

श्री॥

३७

धियश्च नः ॥ तस्याया तनुवा तु खमं विष्णुदत्तिका ॥ धनं मूर्कं शिरोऽर्पितुं धर्मवार्कं कवामनी ॥ कृता
 धर्मस्य दातुं यः शिवाय नमः विष्णवे नमः ॥ जगत्सु मूर्कं ध्यात्वा नमः कानि धना अतः ॥ विष्णुदाय तत्संस्तु
 मूर्कं नमः शिरोऽर्पितुं ॥ तथापि सायं धर्मं मूर्कं ध्यात्वा नमः ॥ समुद्रिया तया मास ह्ययं
 दीप्यते गवः ॥ दद्यात्पुण्यं वा रात्र्याः शयनं सर्वद्वाराणां मन्त्राणां श्रद्धा नदी ॥ नववर्षं शिरोऽर्पितुं सुखं
 सुखेन वदन्ते लोकं तथार्यं ह्यमरं ह्ययं सर्वलोकस्य कर्तुं ॥ दिवा अमुनिगतामममयया मयथा विना ॥
 सानिवाधवा यय धनं नवतुका ॥ नियतं शत दातुं यः शिवाय नमः विष्णवे नमः ॥ जगत्सु मूर्कं ध्यात्वा नमः

मूनिविस्मयकावर्क॥ तानि यद्वै सखिर्वै हृत्वा तानात्रिकासह॥ उत्पल्य जाम यामास विद्वयवचनी
 तले॥ सदिक्काधवनीयायामुष्टि मूयम्यवगिरि॥ अरुध्रवत इष्टात्मात्रादिकानि धनं दद्यात्॥ तमयानि
 ५॥ तमादवी सर्वदेवजनध्वनी॥ जगत्प्रापयामास शिखां परलेन वदसि॥ सगतामहवयागार्थी
 दवीश्वलायनीद्विगता॥ वालयन् सकली यथी साद्विद्यायां सयध्वनी॥ ततश्च सन्नमस्विनी रुत
 तस्मिन् दुर्वात्मनि॥ जगत्प्रापयामास शिखां परलेन वदसि॥ सगतामहवयागार्थी
 समीपयुश॥ सवितामार्जवादिन्यरुध्रमं रुतयाकिता॥ तमादवीगतामहवयागार्थी
 ५॥

दू निरुतामिन् मंधवैल्लिलिर्जगुश॥ अवाक्यं सुखे वाचा ननु मुद्राया वा गता॥ यद्वै दया रुता
 वाता॥ सुप्रशस्तदिव्यकन॥ जगत्प्रापयामास शिखां परलेन वदसि॥ सगतामहवयागार्थी
 ययुवातामावर्त्तितमसकन
 सूत्रं संप्रदासुवावर्त्तितमसकन
 सा॥ ॥ दवाडुवश॥ दविषयवर्त्तितमसकन
 दिविषी॥ तमीध्वनीदविषयवर्त्तितमसकन
 ५॥

यमा। गण. हर्षुदेखानु यमा यम। ऐलायशमसहिर्। नानायतिनमा मुता॥ कित्रीठिमिमकायऊसहउ
 तयनाकाल। हरुयावहववेदि। नानायतिनमा मुता॥ निवहृतीस्व नूयत रुतदेणमकावल। धाजनेय
 ॥ मदात्राव नानायतिनमा मुता॥ **देहाकनालवदन**। सित्रामालाविरुया। यामू। मुमुमथनं ना
 नायतिनमा मुता॥ लक्ष्मिल ऊ **महाविद्य**। शुद्धयष्टिस्व। धेधेव। मकावाणि मकाविद्य। नानायति
 नमा मुता॥ मधेसनस्वतिव्यरुतिवा उमिनामसि। नीयतत्वे पसीधे। नानायतिनमा मुता॥ सर्वताया
 लियादाने सर्वताया सित्रामाखि। सर्वताया वगया। नानायतिनमा मुता॥ सर्वस्वयसर्व। सर्वशक्ति

३८

समन्विता। रुयस्य मुदिनादवि **इ**। **देहाकनालवदन**। नानायतिनमा मुता॥ एतत्तु वदनं सोम्यं। लावनयस्वयिनी। यादुन
 सर्वहीतिर्यः कायायाति नमा मुता॥ **हालाकनालमहू**। मणीयासुनस्वदनं। जिह्वलीयादुमासीत रुडका
 लि नमा मुता॥ **हिनकिदेखतजा**। सि. स्वननापूर्यया जगत्। सायगयादुनादवि। यायस्थानः सुता
 निव॥ **असुवास्वसोयैकवर्षि**। तर्ककनालः। उरायस्व। आरुवहु। वगुक्त्वा नमादयी॥ प्राम
 न। **मया नयहंसि**। शुद्धा। नूयानुकामान् सकलान् शिष्टान्। त्वामाशिता नीनवि यद्वार्ध। त्वामाशिता आश
 यणीययानि॥ एतत्तु कर्तव्यत्वं वदनीययाय। धर्मद्विषां दवि मकासुनादी॥ नयेव। देकैर्विद्वत्साम्पत्तिर्यत्ना

॥॥

वानराजगणानां नृपानां ततो यो घात कदापि न रवि विद्यति ॥ तस्मान्ममेतन्माहात्म्यं यद्विगतार्थं समाहितं ॥ आचार्यस्य
 वारुणा यन्त्रं स्वस्वयन्नेदितं ॥ उयसं गन्धेन तस्मात्तु महामयी समुद्रवान् ॥ तथैति विधमृत्यापी माहात्म्यं समय
 ममा ॥ अथैतत्तु शतं सीमं कनिष्ठं मया तनमम ॥ सदानां विमोक्षाति साविधं गुरुमस्ति ॥ वलियुदानं स
 जाया मन्त्रिका यन्महात्मा वा स र्वं ममेतच्च निरामृता र्थं गाय मयं य ॥ जानता जानता य विवलि पूजा व
 थारता ॥ एतन्निष्ठं श्राम्य हं पीत्या वक्रिहामं तथारता ॥ तत्र का तमहायूजा विरता यावदाविकी ॥ तस्यां ममे
 तन्माहात्म्यं पुत्रारुकि समन्वितं ॥ मनश्चामनुसादनं रवि विद्यति न सीमं य ॥ इत्थाममेतन्माहात्म्यं तथैव

॥॥

त्यक्त्य ॥ ७८ ॥ यवकर्म ययुद्धं जायत निर्दयं ययुमान् ॥ विद्यवर्षं दयं यानि कल्याणी याय जायत ॥ नन्द
 तय कर्तृपूसा माहात्म्यं मम दृष्टं ॥ एतन्निष्ठं कर्म विस्वर्गं तथैव स्वप्नदर्शनं ॥ एतन्निष्ठं गुरुया गुरुया माहात्म्यं
 गुरुया तनमम ॥ उयसं गन्धेन समीया कि एतन्निष्ठं ययुमान् ॥ इत्थं स्वप्नदर्शनं रिद्धं स्वप्नमय जायता ॥ वा
 लगुहारि रत्नानां वाला नीम कि कावर्क ॥ सीमात रुद्रवर्णं मेषी कवर्क मूलमी ॥ इत्थं नाम तस्याने वत्
 हानि कर्तृयव ॥ वदार्हता यि मयानी ययुमान् ॥ सद्यं ममेतन्माहात्म्यं मम सविधिकारकं ॥ ययुमान् ययु
 ध्वये ध्वये गीधदीये सुधामेश ॥ विजापी रुद्रवर्णं मेषी ॥ इत्थं ययुमान् ॥ अथैव विविधे ध्वने ॥ ययुमान् ययु

मार्क... उवाच ॥ कृति... उवाच ॥ अथा किलपि... उवाच ॥ तस्मात्तन्निर्दिष्टं... उवाच ॥
 उवाच ॥ अथवा... उवाच ॥ कथय... उवाच ॥ सुखं... उवाच ॥ तस्मात्तन्निर्दिष्टं... उवाच ॥
 उवाच ॥ अथवा... उवाच ॥ कथय... उवाच ॥ सुखं... उवाच ॥ तस्मात्तन्निर्दिष्टं... उवाच ॥
 उवाच ॥ अथवा... उवाच ॥ कथय... उवाच ॥ सुखं... उवाच ॥ तस्मात्तन्निर्दिष्टं... उवाच ॥
 उवाच ॥ अथवा... उवाच ॥ कथय... उवाच ॥ सुखं... उवाच ॥ तस्मात्तन्निर्दिष्टं... उवाच ॥
 उवाच ॥ अथवा... उवाच ॥ कथय... उवाच ॥ सुखं... उवाच ॥ तस्मात्तन्निर्दिष्टं... उवाच ॥
 उवाच ॥ अथवा... उवाच ॥ कथय... उवाच ॥ सुखं... उवाच ॥ तस्मात्तन्निर्दिष्टं... उवाच ॥
 उवाच ॥ अथवा... उवाच ॥ कथय... उवाच ॥ सुखं... उवाच ॥ तस्मात्तन्निर्दिष्टं... उवाच ॥

॥ अथवा... ॥

१७७५ मसंयत १२१० सालमा श्री गुरु श्री
गुरुद्विक्रम साहदेव

1906 I

ISHA ARMY